

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक जागरण

दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. 19 कॉलम 2-8

# ग्लोबल वार्मिंग से 2050 तक 10 फीसद प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त

जागरण संघाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान और मृत्यु पालन विभाग की तरफ से दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में

जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष डा. ओपी चौधरी ने मुख्यातिथि शिरकत की। सेमिनार में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष डा. ओपी चौधरी ने एचएयू में जैव विविधता पर आयोजित कार्यक्रम में की शिरकत

मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

40177 प्रजातियों से लगभग 40 फीसद विलुप्त होने के खिलाफ पर : डा. ओपी चौधरी ने कहा उर्वरक

और कीटनाशक के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी का बातावरण दूषित हो जाता है, जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियों खतरे में हैं, जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आइयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 फीसद को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सीडी व एल्यूमानाई बुक का विमोचन

किया। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। उन्होंने कहा इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक मंच पर इकट्ठा होकर जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम करने की नवीनतम तकनीकों को प्रस्तुत करना है ताकि जैव विविधता को बनाए रखा जा सके।



मुख्य अतिथि डा. ओपी चौधरी सीडी का विमोचन करते हुए। ● जागरण पांच से अधिक राज्यों से आए प्रतिभागी

जीव विज्ञान व मृत्यु पालन विभाग की अध्यक्षा डा. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार आदि विभिन्न राज्यों से प्रतिभागी भाग लेने आए हैं। प्रतिभागियों का स्वागत डा.

एसके सहरावत, निवेशक अनुसंधान ने किया। इस अवसर पर विविध कुलसचिव डा. गीआर कंबोज, ओएसडी टू वीसी डा. एमके गर्ग, डीन, डायरेक्टर, फैकल्टी व छात्र और विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागी उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम .....

दृष्टि : मुख्यमं

दिनांक .17.7.2019.

पृष्ठ सं. 14

कॉलम

7-9

ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त

# जैव-विविधता का कम होना पिंता का विषय : डॉ. चौधरी

- हक्किंग में जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर पर दो दिवसीय सेमिनार का शुभारंभ

## हाईटेक्नो न्यूज़ ऐडिशनरी



हिसार। सीडी का विमोचन करते मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी।

केंद्र सरकार के जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष एवं पशुपालन व डेयरी विभाग के संयुक्त सचिव डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। अध्यक्ष डॉ. चौधरी मंगलवार को हक्किंग बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के उद्घाटन

समारोह को बतार मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार की अध्यक्षता कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की। सेमिनार का मुख्य विषय जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर है।

**बढ़ती जनसंख्या व प्रदूषण के कारण नुकसान**  
मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी ने

कहा कि जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य, और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा-विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों को कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

## उर्वरक व कीटनाशकों से वातावरण दूषित

चौधरी ने कहा कि उर्वरक और कीटनाशक के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में

बर्गीकृत किया गया था; इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।

## प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित करना संभव

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि अज्ञकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बन रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से लापत होती प्रजातियों को पुनः बचाया

जा सकता है।

## देशभर से प्रतिभावी ले रहे हिस्टोरी

जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्ष डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभावी भाग लेने आए हैं। प्रतिभावीयों का स्वागत डॉ. एस.के सहरावत, निदेशक अनुसंधान, तथा धन्यवाद डॉ. रचना गुलाटी ने किया। मुख्य अतिथि ने सोडी व एल्यूमार्न बुक का विमोचन किया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, ओपसडी टू बीसी डॉ. एम.के गर्ग, डीन, डायरेक्टर, फैकल्टी व छात्र तथा विभिन्न राज्यों के प्रतिभावी उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... ऐन के मर्क 2  
दिनांक १७.१.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम २६

# एचएयू • बेसिक साइंस कॉलेज में बायोडायवर्सिटी विषय की चुनौतियों व समाधानों पर सेमिनार में एवस्पटर्स ने हालातों पर जताई चिंता मिट्टी और पानी में घुल रहे रसायनों के कारण 40,177 जीव जंतुओं की प्रजातियों में से 40% विलुप्त होने के कारण पर हैं। आईयूसीएन रेड लिस्ट नाम से एक सूची भी जारी की गई है जिसमें इन प्रजातियों का जिला किया गया है। यह ग्राम्यानिक दवाओं मिट्टी और पानी के माध्यम से प्रजातियों के लिए बहाना कर रही है, इस पर विचार नहीं किया गया तो यह अगे चलकर मानव जीवन के लिए भी एक बड़ा खतरा बन जाएगा। दरअसल, एचएयू में गणतन्त्र को बेसिक साइंस कॉलेज के



एचएयू में बायोडायवर्सिटी विषय पर सेमिनार के दौरान पश्चात विभाग के संस्कृत मंचिक छां. आपी चौधरी व अन्य।

जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा नामों द्वायर्सिटी विषय की चुनौतियों व समाधानों पर सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें केन्द्र के जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष व पश्चात विभाग में परिवर्तन, वनों की कटाई कीमत के लिए खातर बढ़ती जारी चौधरी व अन्य विभिन्न विषयों को नुकसान पहुंच रहा है।

## जानिए... बायोडायवर्सिटी किस प्रकार से चुनौती

छां. आपी चौधरी बताते हैं कि जीव-विभिन्नता का कम होना सभी के लिए वित्त का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर श्वेतक वामिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियों किसित हो जाएंगी। जीव-विभिन्नता से प्रभावित कृषि स्वास्थ्य मुख्य में आहार, स्वास्थ्य और पापाण सुखांशु, संक्रमक रोग, विकल्प विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामग्रिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बड़ी जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जीव-विभिन्नता को नुकसान पहुंच रहा है।

## मिट्टी हो रही प्रदूषित

छां. चौधरी बताते हैं कि उचित और कोटनाशक के अध्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण सुधित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पहलत है। 2006 में कई प्रजातियों की औषधीय संसाधन, सामग्रिक और सूखांशु व खतरे में काफ़िर किया गया था। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि हजारों और प्रजातियों खतरे में हैं।

## जानें... यहाँ है समस्या के कारण

कुलपति श्रो. केपी सिंह बताते हैं कि आजकल मानवजनन गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण अदातान, पानी की कमी कीमत व नियंत्रण कारण से वनों की कटाई जीव-विभिन्नता के लिए खातर बढ़ती जा रही है। इसलिए जीव-विभिन्नता को संरक्षण प्रदान करने से मनुष्य होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। यहीं जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रवना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेहरालू, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से एकपट्ट हिस्सा लेने आए हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... सभूत उजाला

दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 1-6

सेमिनार

40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है

# जैव-विविधता का कम होना चिंता का विषय : डॉ. चौधरी

अमर उजाला ब्लूग

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक साइंस कॉलेज के जीव विज्ञान व यात्रा वालन विभाग द्वारा आयोजित यो दिवसीय सेमिनार का मंगलवार को सुधारभर हुआ। सेमिनार में जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष एवं पशु पालन व दूधेय विभाग के संयुक्त सचिव डॉ. ओपी चौधरी मुख्य अधिकारी थे। कुलचत्री डॉ. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सेमिनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधता : इसकी समस्याएं, चुनौतियाँ और अवसर' है।



एथाएयू में आयोजित सेमिनार में सीधी का विशेषज्ञ करते कुलचत्री डॉ. केपी सिंह व अन्य।

मुख्य अधिकारी डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर स्वास्थ्य वार्षिक के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियों विलुप्त हो जायेंगी। जैव विविधता से प्रभावित सामिल हैं। बहुती जस्ताज्ञान के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, बन्नी की कटाई और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने कहा डर्विक और कैटनाशक के अस्थायिक सुलगान व खड़े में वर्गीकृत किया गया

पुनर्जीवित किया जा सकता है : कुलपति

कुलपति डॉ. केपी सिंह ने कहा कि अज्ञकल यात्राविज्ञान विश्वविद्यालय, पर्यावरण प्रदूषण, सक्रियता व्यावरण परिवर्तन, पर्यावरण बदलाव, पानी की कटाई करती जा रही है। जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्राकृत होती प्रजातियों को पुनर्जीवित किया जा सकता है। जीव विवान व प्राणवान विभाग की अध्यक्ष डॉ. रघवा गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जग्य कार्यक्रम, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, विहार अदि स्थानों से प्रतिमात्रा पात्र लेने आए हैं। इस अवसर पर दो एकांक सहायता, कुलसमिति डॉ. शीरज कलोज, और एसडी टू बीसी डॉ. एम्पके गर्म, डॉन, डाकोटर्स, फैकल्टी व विद्यार्थी उपस्थित हैं।

एथाएयू में जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा दो दिवसीय सेमिनार का हुआ सुभारंभ

या। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रांतियों के साथरे में हैं, जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। अई-दूसीएप रेस्टिट मनदैव का उपयोग करके मृत्युकंकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अधिकारी ने भीड़ी व एथाएयू मनदैव का विभाग का विमोचन किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... पंजाब कैरिए

दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 1-6

## ग्लोबल वार्मिंग के कारण 4 महाद्वीपों में 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त : डा. चौधरी

### » जैव-विविधता का कम होना वित्ती क्रांतिकरण

हिसार, 16 जुलाई (ब्लूटी) : पी. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मरुस्थल विभाग द्वारा अध्ययनित 2 दिवसीय सेमीनार का शुभारम्भ हुआ। सैमीनार में डा. ओ.पी. चौधरी अध्यक्ष, जीव कल्याण विभाग व संरक्षक सचिव (पशु पालन व फैदरी) मुख्यालिपि ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सचिवार का मुख्य विभाग 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियाँ और अवसर' है।

मुख्यालिपि डा. ओ.पी. चौधरी ने अपने सम्बोधन में कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिना का विषय है। एक अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनके अनुसार अनुमान है कि 4 महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य बुरों में आहार, स्वास्थ्य और जीवन सुरक्षा, संकायक दोष, विकिरण इनाम और जीवांशु जैसी संस्थान, सामाजिक और

डानिक स्वास्थ्य शामिल हैं।



मुख्यालिपि डा. ओ.पी. चौधरी प्रसिद्धांशों को सम्मोहित करते हुए।

### कौटनाशकों से मिटाई होती है दृष्टि

उन्होंने कहा कि उचित और कौटनाशक के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी का बातावरण दूरीपल हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औन्तरिक रूप से दुर्लभ या लुहप्राय या खतरे में बगाकृत किया गया था।

### वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा

कौटनाशक डॉ. के.पी. सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि आवक्षण मानवजीवन गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बहुती काशी व निरीतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रश्न करते से प्रत्युत होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। सैमीनार में जम्मू-कश्मीर, झेंघालाय, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार इन्हांदि विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिवाची भाग लेने आए हैं।

समाचार-पत्र का नाम ..... नं० ५-२०१<sup>२</sup>  
दिनांक ।.६. ७. २०१९. पृष्ठ सं. २ कॉलम ६-८

## जैव-विविधता का कम होना चिंतनीय : चौधरी



हिमार/16 जुलाई/रिपोर्टर

चौधरी घरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मृत्यु पालन विभाग द्वारा 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियाँ और अवसर' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का आज सुभारंप करते हुए मुख्य अधिकारी जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष व संयुक्त सचिव पशु पालन व डेयरी डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य पूरों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, बनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। न्होंने कहा उत्तरक और कोटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का बातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियाँ को औपचारिक रूप से दुर्भाग्य प्राप्त की गयी थीं, इसके अलावा वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियाँ खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदण्ड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियाँ में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य

अधिकारी ने सोही व एल्यूमनाई बुक का विमोचन किया। कार्यक्रम अध्यक्ष कूलपति प्रौ. केपी सिंह ने कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बहुती कमी व निरंतर रूप से बनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता जा संरक्षण प्रदान करने से प्रलूप होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। उन्होंने कहा इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक मंच पर इकट्ठा होकर जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम करने की

नवीनतम तकनीकों को प्रस्तुत करना है ताकि जैव-विविधता को बनाए रखा जा सके और इसके संरक्षण के लिए रणनीति तैयार करने और उन्हें लागू करने की सिफारिश की जा सके। विशेषज्ञों और युवा वैज्ञानिकों के लिए यह सेमिनार प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अधिकारियों के साथ बातचीत करके अपने शैक्षणिक और वैज्ञानिक कौशल को बढ़ाने का एक उत्कृष्ट अवसर प्राप्त होगा। जैव विज्ञान व मृत्यु पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए हैं।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम .....

निष्पत्री प्रैट्र अ० इ० ब्स

दिनांक .16.7.2019.

पृष्ठ सं. ३ कॉलम ... १-२

## जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय : चौधरी

हिसार, 16 जुलाई (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वेसिक सॉइस कालेज के जीव विज्ञान व मर्त्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का आज शुभारंभ हुआ। सेमिनार में डॉ. ओपी चौधरी अध्यक्ष, जीव कल्याण विभाग व संयुक्त सचिव (पशु पालन व डेवरी), भारत सरकार मुख्य अतिथि थे। कुलपति प्रौ. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सेमिनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियाँ और अवसर' है।

मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल चार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औपचारीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, बनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने कहा उर्वरक और कीटनाशक के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था; इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाद्यों और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सीढ़ी व एल्यूमिनाई बुक का विमोचन किया।

कुलपति प्रौ. केपी सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आजकल



मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से बनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रतिशुल्क होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। उन्होंने कहा इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक मंच पर इकट्ठा होकर जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम करने की नवीनतम तकनीकों को प्रस्तुत करना है ताकि जैव विविधता को बनाए रखा जा सके और इसके संरक्षण के लिए रणनीति तैयार करने और उन्हें लागू करने की सिफारिश की जा सके। विशेषज्ञों और सुवा वैज्ञानिकों के लिए यह सेमिनार प्रियद्वंद्व वैज्ञानिक और अधिकारियों के साथ बातचीत करके अपने वैज्ञानिक और वैज्ञानिक कौशल को बढ़ाने का एक उत्कृष्ट अवसर प्राप्त होगा।

जीव विज्ञान व मर्त्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रघुनाथ गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में बम्मु कश्मीर, मेवालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, विहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए हैं। प्रतिभागियों का स्वागत डॉ. एस. के. सहरावत, निदेशक अनुसंधान, तथा धन्यवाद डॉ. रघुनाथ गुलाटी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, ओपसडी टू बीसी डॉ. एम.के. गर्ग, छीन, डायरेक्टर, फैकल्टी व छात्र तथा विभिन्न राज्यों से आये प्रतिभागी उपस्थित थे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... सूर्य  
दिनांक ।.6.7.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-4

## जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय : डॉ. ओपी चौधरी

हकृति में जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा दो दिवसीय सेमिनार आरंभ

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक सोसाइटी कॉर्टेज के जीव विज्ञान व मरुस्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का आज सुभारंभ हुआ। सेमिनार में डॉ. ओपी चौधरी अध्यक्ष, जीव कल्याण विभाग व संयुक्त सचिव (पर्यावरण व डेवरी), भारत सरकार मुख्य अधिकारी थे। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सेमिनार का मुख्य विषय 'जीव-विविधता: इसकी समर्पण, सुनितायां और अवसर' है।

मुख्य अंतर्गत डॉ. ओपो चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि भारत महाद्वीप पर स्थानक बढ़ीमिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रवासियों विचुन्न हो जाएंगे। जैव विविधता में प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्रों में आहार, स्वास्थ्य और पाण्य मुख्य, सक्रमक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औपचार्य संस्करण, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य रामिल हैं। बड़ी जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, बचों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नक्सल पायें रहा है।



हिसार। मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी सोहो का विमोचन करते हुए।

उन्होंने कहा कवरेक और कोट्टारामक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का बातावरण दूरी हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्थानस्थ पर दृष्टिभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों की औपचारिक रूप से दुर्लभ या सुनाया या खतरे में बर्गीकृत किया गया था; इसके अलावा, बैंगानिकों ने अनुमान लगाया है कि लकड़ी और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मानता नहीं थी गई है। कलापति प्रौ. केपी सिंह ने अपने

संबोधन में कहा कि आवाहक समानवर्गनित प्रतिविधियों, पद्धतिवरण प्रदूषण, संकरणित सामाजिक पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी य नियत रूप से बच्चों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्राप्त करने से प्रस्तुत होती प्रजातियों को भुक्त जीवित किया जा सकता है।

कि इस सेमिनार में जम्म करवाये भाषण, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, विहार इलाहादिविभिन्न जिलों से प्रतिभाषण भाषण लेने आए हैं। प्रतिभाषियों का स्वागत और एस.के.सी.एस.के सहायता, निदेशक अनुसंधान, तथा धन्यवाद डॉ. रघुनाथ गुलाटी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, और एसडीटी दू. विस्मी डॉ. एम.के. राणी, डीप, डायरेक्टर, फैकल्टी व छात्र तथा विभिन्न ग्राम्यों से आगे प्रतिभाषण उत्सवित थे।